# 'हमारे राम आ गए'

भाजपा प्रकाशन विभाग

डाउनलोड करने के लिए
स्कैन करें

**श्री जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, भाजपा**

भगवान राम सिर्फ सनातन धर्म में ही नहीं देखे जाते, अनेक धर्मों के ग्रंथों में राम विराजमान हैं, अनेक धर्मों की दृष्टि से लोगों ने राम को अपनाया है और अनेक देशों ने भी राम को अपना माना है। अगर हम गुरुग्रंथ साहिब की बात करें, तो उसमें भी राम का उल्लेख है, अन्य धर्मों की बात करें, तो उनमें भी राम का उल्लेख मिलता है। इसके साथ-साथ अगर हम देश की दृष्टि से भी देखें, तो थाईलैंड के जो राजा हैं, उनको भी हम, The King hold of the 10th Rama कहते हैं, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। उनका टाइटल The King Rama 10th है। यह थाईलैंड में राजा को कहा जाता है, इसके नाम से सम्बोधित किया जाता है। अगर हम बात करें, तो इंडोनेशिया में, जो मुस्लिम प्रधान देश है, वहां भी रामायण प्रतिदिन ब्रॉडकास्ट होती है, वहां पर सरकारी टेलीविजन में दिखाया जाता है, इसको भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। इसी तरीके से साउथ कोरिया की रानी की वंशावली भी राम से प्रारम्भ होती है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए

10 फरवरी, 2024

# 'हमारे राम आ गए'

अयोध्या में 22 जनवरी, 2024 को श्री रामलला के अभिषेक के अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का संबोधन, संसद में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा एवं केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के संबोधन पर आधारित

**भाजपा प्रकाशन विभाग**

6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

# प्रकाशकीय

अयोध्या धाम में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा का उत्सव जहां पूरे देश ने पूर्ण उत्साह के साथ मनाया, वहीं इस ऐतिहासिक अवसर का आनंद पूरे विश्व के करोड़ों रामभक्तों हृदयों के भावनात्मक उद्‌गार के रूप में प्रकट हुआ। 'प्राण-प्रतिष्ठा' अनुष्ठान के तुरंत बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने उद्बोधन में करोड़ों लोगों की भावनाओं को बहुत ही सुंदर रूप में व्यक्त किया। सदियों का इंतजार जब पूर्ण होता है तब उससे निकलने वाली ऊर्जा उच्च लक्ष्यों की राह आसान कर देती है। 'प्राण-प्रतिष्ठा' का पूरे देश ने न केवल साक्षात्कार किया, बल्कि देश के कोने-कोने में लोगों ने इस पवित्र अवसर पर पूजा, हवन एवं भंडारा करके पूरे श्रद्धा से इसमें भागीदारी की। जन-जन ने इस अवसर को एक राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाया। प्रधानमंत्री जी के आह्वान पर एक सप्ताह पूर्व से ही देश के सभी मंदिरों में 'स्वच्छ तीर्थ अभियान' के अंतर्गत स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा 22 जनवरी, की संध्या में हर घर 'राम ज्योति' के प्रकाश में दीपावली मनाई गई। आज भगवान श्रीराम मंदिर की भव्यता का दर्शन पूरा विश्व कर रहा है तथा 'प्राण-प्रतिष्ठित' भगवान श्रीरामलला की प्रतिमा की आभा से हर भक्त का हृदय प्रकाशमान है। हर गांव, हर नगर, हर महानगर— पूरा देश एक दिव्य अनुभूति से आप्लावित हो रहा है कि रामलला अब आ गए हैं, यह स्वप्न अब साकार हो चुका है।

हम अपने सुधी पाठकों के लिए 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए संबोधन, संसद में भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा और केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के संबोधन के साथ प्रकाशित कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि हमारे पाठक इन संबोधनों को पढ़कर इस अवसर के महत्व को गहराई से समझ सकेंगे और आने वाले हजारों वर्षों के लिए 'रामराज्य' की परिकल्पना को साकार करने के अपने प्रयासों को और मजबूती प्रदान करने में सक्षम होंगे।

**प्रकाशक**

**भाजपा प्रकाशन विभाग**

मार्च, 2024 6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002

# अनुक्रमणिका

**प्रकाशकीय**


भारत के उत्कर्ष और उदय का साक्षी बनेगा भव्य श्रीराम मंदिरः **नरेन्द्र मोदी** 06

प्रधानमंत्री मोदी जी ने रामराज्य को साकार किया हैः **जगत प्रकाश नड्डा** 16

भारत के गौरवमय युग की यह शुरुआत हैः **अमित शाह** 29

# भारत के उत्कर्ष और उदय का साक्षी बनेगा भव्य श्रीराम मंदिर: नरेन्द्र मोदी

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 22 जनवरी, 2024 को रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद विशिष्ट आमंत्रित महानुभावों को संबोधित किया। इस संबोधन में श्री मोदी ने कहा कि सदियों की प्रतीक्षा के बाद आखिरकार हमारे राम आ गए हैं। उन्होंने यह भी कहा कि श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा न केवल लंबे संघर्ष के बाद विजय का क्षण है, बल्कि विनम्रता का भी क्षण है। हम यहां अपने सुधी पाठकों के लिए इस संबोधन का सम्पूर्ण पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:**

सियावर रामचंद्र की जय।
सियावर रामचंद्र की जय।।

श्रद्धेय मंच, सभी संत एवं ऋषिगण, यहां उपस्थित और विश्व के कोने-कोने में हम सबके साथ जुड़े हुए सभी रामभक्त, आप सबको प्रणाम, सबको राम-राम।

आज हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं। इस शुभ घड़ी की आप सभी को, समस्त देशवासियों को, बहुत-बहुत बधाई।

## नव इतिहास का सृजन

मैं अभी गर्भगृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बनकर आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। कितना कुछ कहने को है... लेकिन कंठ अवरुद्ध है। मेरा शरीर अभी भी स्पंदित है, चित्त अभी भी उस पल में लीन है। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। मेरा पक्का विश्वास है, अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने-कोने में रामभक्तों को हो रही होगी। ये क्षण अलौकिक है। ये पल पवित्रतम है। ये माहौल, ये वातावरण, ये ऊर्जा, ये घड़ी... प्रभु श्रीराम का हम

सब पर आशीर्वाद है। 22 जनवरी, 2024 का यह सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है। 22 जनवरी, 2024, यह कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं, यह एक नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। आज हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, आज हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात् घटित होते देख रहे हैं। आज दिन-दिशाएं... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएं हैं।

**गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है**

हम सब जानते हैं कि जहां राम का काम होता है, वहां पवनपुत्र हनुमान अवश्य विराजमान होते हैं। इसलिए, मैं रामभक्त हनुमान और हनुमानगढ़ी को भी प्रणाम करता हूं। मैं माता जानकी, लक्ष्मण जी, भरत-शत्रुघ्न, सबको नमन करता हूं। मैं पावन अयोध्या पुरी और पावन सरयू को भी प्रणाम करता हूं। मैं इस पल दैवीय अनुभव कर रहा हूं कि जिनके आशीर्वाद से यह महान कार्य पूरा हुआ है... वे दिव्य आत्माएं, वे दैवीय विभूतियां भी इस समय हमारे आस-पास उपस्थित हैं। मैं इन सभी दिव्य चेतनाओं को भी कृतज्ञतापूर्वक नमन करता हूं। मैं आज प्रभु श्रीराम से क्षमा याचना भी करता हूं। हमारे पुरुषार्थ, हमारे त्याग, तपस्या में कुछ तो कमी रह गयी होगी कि हम इतनी सदियों तक यह कार्य कर नहीं पाए। आज वो कमी पूरी हुई है। मुझे विश्वास है, प्रभु राम आज हमें अवश्य क्षमा करेंगे।

त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है— प्रभु बिलोकि

हरषे पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात्, प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। हमारी कई-कई पीढ़ियों ने वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। मैं आभार व्यक्त करूंगा भारत की न्यायपालिका का, जिसने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्यायबद्ध तरीके से ही बना।

## एकत्व की अनुभूति

आज गांव-गांव में एक साथ कीर्तन, संकीर्तन हो रहे हैं। आज मंदिरों में उत्सव हो रहे हैं, स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। पूरा देश आज दीवाली मना रहा है। आज शाम घर-घर राम ज्योति प्रज्वलित करने की तैयारी है। कल मैं श्रीराम के आशीर्वाद से धनुषकोडि में रामसेतु के आरंभ बिंदु अरिचल मुनाई पर था। जिस घड़ी प्रभु राम समुद्र पार करने निकले थे, वो एक पल था जिसने कालचक्र को बदला था। उस भावमय पल को महसूस करने का मेरा यह विनम्र प्रयास था। वहां पर मैंने पुष्प वंदना की। वहां मेरे भीतर एक विश्वास जगा कि जैसे उस समय कालचक्र बदला था, उसी तरह अब कालचक्र फिर बदलेगा और शुभ दिशा में बढ़ेगा। अपने 11 दिन के व्रत-अनुष्ठान के दौरान मैंने उन स्थानों का चरण स्पर्श करने का प्रयास किया, जहां प्रभु राम के चरण पड़े थे। चाहे वो नासिक का पंचवटी धाम हो, केरल का पवित्र त्रिप्रायर मंदिर हो, आंध्र प्रदेश में लेपाक्षी हो, श्रीरंगम में रंगनाथ स्वामी मंदिर हो, रामेश्वरम में श्री रामनाथस्वामी मंदिर हो, या फिर

भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली

धनुषकोडि... मेरा सौभाग्य है कि इसी पुनीत पवित्र भाव के साथ मुझे सागर से सरयू तक की यात्रा का अवसर मिला। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण-कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है!

## रामकथा असीम है

मुझे देश के कोने-कोने में अलग-अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग-अलग भाषा में, अलग-अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला। राम को परिभाषित करते हुये ऋषियों ने कहा है— रमन्ते यस्मिन् इति रामः॥ अर्थात्, जिसमें रम जाया जाए, वही राम है। राम लोक की स्मृतियों में, पर्व से लेकर परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने-अपने शब्दों में, अपनी-अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और यह रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। प्राचीन काल से भारत के हर कोने के लोग रामरस का आचमन करते रहे हैं। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं।

> **हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने-अपने शब्दों में, अपनी-अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है**

## राम विवाद नहीं, समाधान हैं

आज इस ऐतिहासिक समय में देश उन व्यक्तित्वों को भी याद कर रहा है, जिनके कार्यों और समर्पण की वजह से आज हम यह शुभ दिन देख रहे हैं। राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा

करके दिखाई है। उन अनगिनत रामभक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं।

आज का यह अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही यह क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए यह अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल परिस्थितियां बन गईं, लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। वो भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज की शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, यह निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्ज्वल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया है। मैं आज उन लोगों से आह्वान करूंगा... आइए, आप महसूस कीजिए, अपनी सोच पर पुनर्विचार कीजिए। राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।

**रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज की शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, यह निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है**

## 'वसुधैव कुटुंबकम्' की प्रतिष्ठा

आज जिस तरह राममंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव

भारत में है, वैसा ही अनेक देशों में है। आज अयोध्या का यह उत्सव रामायण की उन वैश्विक परम्पराओं का भी उत्सव बना है। रामलला की यह प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

## राम भारत की चेतना हैं

आज अयोध्या में केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण-प्रतिष्ठा है। यह साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण-प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' यह संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। आज उसी संकल्प को राममंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। यह मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। यह भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। यह राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है— राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात्, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों

राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं

वर्षों तक राम विश्व पथप्रदर्शन करते रहे थे। इसलिए मेरे आज अयोध्या भूमि हम सभी से, प्रत्येक रामभक्त से, प्रत्येक भारतीय से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया...अब आगे क्या? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया...अब आगे क्या? आज के इस अवसर पर जो दैव, जो दैवीय आत्माएं हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुई हैं, हमें देख रही हैं, उन्हें क्या हम ऐसे ही विदा करेंगे? नहीं, कदापि नहीं। आज मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है। यह सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हज़ार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। इसलिए मैं कहता हूं— यही समय है, सही समय है। हमें आज से, इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी, यहीं इस पल से समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है।

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। हनुमान जी की भक्ति, हनुमान जी की सेवा, हनुमान जी का समर्पण— ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हमें बाहर नहीं खोजना पड़ता। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण के ये भाव, समर्थ-सक्षम,भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेंगे। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! दूर-सुदूर जंगल में कुटिया में जीवन गुजारने वाली मेरी आदिवासी मां शबरी का ध्यान आते ही, अप्रतिम विश्वास जागृत होता है। मां शबरी तो कबसे कहती थीं— राम आएंगे। प्रत्येक भारतीय में जन्मा यही विश्वास, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगा और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! हम सब

जानते हैं कि निषादराज की मित्रता, सभी बंधनों से परे है। निषादराज का राम के प्रति सम्मोहन, प्रभु राम का निषादराज के लिए अपनापन कितना मौलिक है! सब अपने हैं, सभी समान हैं। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की ये भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

आज देश में निराशा के लिए रत्तीभर भी स्थान नहीं है। मैं तो बहुत सामान्य हूं, मैं तो बहुत छोटा हूं, अगर कोई ये सोचता है, तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे-बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

**आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल-पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे**

## रामकाज से राष्ट्रकाज

लंकापति रावण, प्रकांड ज्ञानी थे, अपार शक्ति के धनी थे, लेकिन जटायु जी की मूल्य निष्ठा देखिए, वे महाबली रावण से भिड़ गए। उन्हें भी पता था कि वो रावण को परास्त नहीं कर पाएंगे। लेकिन फिर भी उन्होंने रावण को चुनौती दी। कर्तव्य की यही पराकाष्ठा समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार है और यही तो है, देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल-पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे।

## परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता

प्रभु श्रीराम की हमारी पूजा, विशेष होनी चाहिए। ये पूजा, स्व से ऊपर उठकर समष्टि के लिए होनी चाहिए। ये पूजा, अहम से उठकर वयम के

लिए होनी चाहिए। प्रभु को जो भोग चढ़ेगा, वो विकसित भारत के लिए हमारे परिश्रम की पराकाष्ठा का प्रसाद भी होगा। हमें नित्य पराक्रम, पुरुषार्थ, समर्पण का प्रसाद प्रभु राम को चढ़ाना होगा। इनसे नित्य प्रभु राम की पूजा करनी होगी, तब हम भारत को वैभवशाली और विकसित बना पाएंगे।

यह भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है। मैं अपने देश के युवाओं से कहूंगा। आपके सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। आप भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं— जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस, सागर में विक्रांत का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा।

यह भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है

## भारत के उत्कर्ष का समय

आने वाला समय अब सफलता का है। आने वाला समय अब सिद्धि का है। यह भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा— भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, यह भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा— भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का! यह मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। यह भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सबने

इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। इसी भाव के साथ रामलला के चरणों में प्रणाम करते हुए आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। सभी संतों के चरणों में मेरे प्रणाम।

**सियावर रामचंद्र की जय।**
**सियावर रामचंद्र की जय।**
**सियावर रामचंद्र की जय।**

❑❑❑

# प्रधानमंत्री मोदी जी ने रामराज्य को साकार किया है: जगत प्रकाश नड्डा

**भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने 10 फरवरी, 2024 को श्री राम मंदिर के ऐतिहासिक निर्माण और 'प्राण–प्रतिष्ठा' समारोह पर राज्यसभा में एक संक्षिप्त चर्चा में भाग लिया। श्री नड्डा ने कहा कि मंदिर बेहतरीन मानवीय मूल्यों के प्रतीक के रूप में काम करेगा और यह वैश्विक संघर्षों के बीच भी शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की याद दिलाता है। यहां, हम अपने सुधी पाठकों के लिए इस संबोधन का सम्पूर्ण पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:**

सभापति महोदय, मैं आज रूल 176 के तहत राम जन्मभूमि के निर्माण पर और प्राण-प्रतिष्ठा पर चल रही चर्चा में भाग लेने के लिए खड़ा हुआ हूं। आपने मुझे समय दिया, उसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं। जब हम राम जन्मभूमि और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की चर्चा करते हैं, तो मेरे लिए यह कोई किसी विषय पर सिर्फ बोलना ही नहीं, मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे ऐसे पवित्र विषय पर इस सदन में बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस ऐतिहासिक विषय पर बोलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह हम सबके लिए बहुत ही गौरवशाली घड़ी है। यह गौरवशाली पल है, समय है कि हम सब लोग अपनी आंखों से रामलला को विराजमान होते हुए, उसकी प्राण-प्रतिष्ठा को अपनी आंखों से हम सबको देखने का सौभाग्य मिला है। इस ऐतिहासिक घड़ी के हम पार्ट एंड पार्सल बने, इस ऐतिहासिक घड़ी को हम सब लोगों ने अपने साथ आत्मसात् किया। यह ईश्वरीय कृपा के बगैर संभव नहीं है। इसलिए हम सब लोगों को उस ईश्वर का धन्यवादी होना चाहिए, जिसने हमें यह सौभाग्य दिया कि हम इस मौके पर अपने आपको शामिल करें।

## राम भारत की आत्मा

500 साल का लंबा संघर्ष, 1528 से लेकर 2023 तक कितनी पीढ़ियां

बीत गईं। कितना समय बीत गया, कितना लम्बा संघर्ष चला, हम तो कहते हैं कि रामजी का वनवास 14 वर्ष का था, लेकिन रामजी का वनवास तो 500 साल का भी है। एक तरीके से उनको टेंट में रहना पड़ा, तकलीफों में रहना पड़ा और उसके बाद आज जब रामलला अपने मंदिर में, अपने भवन में विराजमान होते हैं, यह हम सब के लिए एक ऐतिहासिक घड़ी और गौरवशाली दिन है। जब हम 500 साल का इतिहास बताते हैं, तो वह गुलामी भरा इतिहास है, संघर्ष भरा इतिहास है और जब हम 22 जनवरी, 2024 की बात करते हैं, तो हम उस दिन को spiritual, cultural, conscience का resurgence का दिन मानते हैं। वह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक चेतना का पुनर्जागरण का दिन होता है, यह भी हमको ध्यान में रखना है। कोई हजार साल नहीं, कोई 10 हजार साल नहीं, सहस्त्र शताब्दियों तक इस दिन को याद रखा जाएगा, यह ऐतिहासिक दिन होगा, यह भी हमको याद रखना होगा। भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम इस देश की आत्मा हैं, इस देश का संस्कार हैं, इस देश की जीवन-पद्धति हैं और इस देश की मर्यादाओं के बारे में चर्चा करने का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम राम है। इसको हमको समझना चाहिए।

> **भगवान राम, मर्यादा पुरुषोत्तम राम इस देश की आत्मा हैं, इस देश का संस्कार हैं, इस देश की जीवन-पद्धति हैं और इस देश की मर्यादाओं के बारे में चर्चा करने का नाम मर्यादा पुरुषोत्तम राम है**

इसके साथ-साथ हम सब लोग उनको भगवान राम की तरह, मर्यादा पुरुषोत्तम राम की तरह तो देखते ही हैं, लेकिन अपने व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक जीवन में हमें किस तरीके से आगे बढ़ना है, इसका भी मार्ग प्रशस्त करते हैं और भगवान राम का जीवन यह करता है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। भगवान राम सिर्फ सनातन धर्म में ही नहीं देखे जाते, अनेक धर्मों के ग्रंथों में राम विराजमान हैं, अनेक धर्मों की दृष्टि से लोगों ने राम को अपनाया है और अनेक देशों ने भी राम को अपना माना है। अगर हम गुरुग्रंथ साहिब की बात करें, तो उसमें भी राम का उल्लेख है, अन्य धर्मों की बात करें, तो उनमें भी राम का उल्लेख मिलता है। इसके साथ-साथ अगर हम

देश की दृष्टि से भी देखें, तो थाईलैंड के जो राजा हैं, उनको भी हम, The King Rama the 10th कहते हैं, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। उसका टाइटल The King Rama the 10th है। यह थाईलैंड में राजा को कहा जाता है, इसके नाम से सम्बोधित किया जाता है। अगर हम बात करें, तो इंडोनेशिया में, जो मुस्लिम प्रधान देश है, वहां भी रामायण प्रतिदिन ब्रॉडकास्ट होती है, वहां पर सरकारी टेलीविजन में दिखाया जाता है, इसको भी हमें ध्यान में रखना चाहिए। इसी तरीके से साउथ कोरिया की रानी की वंशावली भी राम से प्रारम्भ होती है, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए। इसलिए हम राम को संकुचित नहीं कर सकते हैं, हम संकुचित दृष्टि से राम को नहीं देख सकते हैं। हमको उसे एक विराट रूप में देखना पड़ेगा, एक जीवन-पद्धति के रूप में देखना पड़ेगा, यह हम सबको ध्यान में रखना पड़ेगा।

**जहां तक हमारी भारतीय जनता पार्टी का सवाल है, हमने वर्ष 1989 में पालमपुर के प्रस्ताव में इस बात को स्पष्ट किया था कि हम राम जन्मभूमि पर रामलला का विराट मंदिर बनने के रास्ते को प्रशस्त करेंगे।**

## 500 वर्षों का संघर्ष

मैं यहां पर यह भी कहना चाहूंगा कि यह जो 500 साल का संघर्ष है, इसमें अनेक राजाओं ने संघर्ष किया है, जनता ने संघर्ष किया है, साधु-संतों ने संघर्ष किया है, हमारे निहंग भाइयों ने संघर्ष किया है और अभी का ताजा-ताजा संघर्ष, हमारे पिछले 30 साल का संघर्ष आप सभी लोगों ने देखा है। इस संघर्ष में अगर मैं 500 साल की बात करूं, तो हजारों जिंदगियां गई हैं, हजारों ने अपने आप को आहूत किया है, अगर पिछले तीस साल की हम बात करें, तो सैकड़ों लोगों ने अपने आपको आहूत किया, इस राम जन्मभूमि को, अपने रामलला को वहां विराजमान करने के लिए। सबसे पहले तो मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से और मैं समझूंगा कि इस हाउस का भी यह मत होगा कि उन तमाम लोगों ने, जिन्होंने संघर्ष में अपना जीवन दिया है, उनके प्रति हम नमन करते हैं, उनको श्रद्धांजलि देते हैं, उनको श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

जहां तक हमारी भारतीय जनता पार्टी का सवाल है, हमने वर्ष 1989 में पालमपुर के प्रस्ताव में इस बात को स्पष्ट किया था कि हम राम जन्मभूमि पर रामलला का विराट मंदिर बनने के रास्ते को प्रशस्त करेंगे। हमने ऐसा वर्ष 1989 में कहा था। उस समय लोग बोलते थे कि ये क्या बोल रहे हैं, कैसी बात कर रहे हैं। हमने कहा था कि हम अपने प्रस्ताव के माध्यम से बताते हैं कि हम रामलला के मंदिर को बनाने के लिए मार्ग को प्रशस्त करेंगे। इसको करने के लिए हम सभी लोगों ने एक तरीके से एकजुट होकर इस कार्य को आगे बढ़ाने का काम किया। यह दीगर बात है कि जब सारा देश एकजुट था, जिसका प्रमाण हमें 22 जनवरी को देखने को मिला, दुनिया एकजुट हुई, सारी दुनिया ने एक माना, तब कुछ लोगों ने अलग राग भी अलापा और उसको अलग तरीके से देखने का प्रयास भी किया। जब अलग तरीके से देखने का प्रयास किया, तो उसमें रुकावटें डालीं, रोड़ा डाला। अटकाना, लटकाना, भटकाना, रास्ते से अलग तरीके से ले जाना— हम लोगों ने यह भी देखा है। मुझे वह समय भी याद है, उस समय मैं युवा था और युवा मोर्चा का अध्यक्ष था, उस समय हमने वे गोलियां भी देखीं, वे लाठियां भी खाईं, जेल के दर्शन भी किए, कार्यालयों की वह बंदी भी देखी और दिल्ली में जो लोग कहते थे कि परिंदा भी नहीं फटकेगा, वहां आंदोलन भी देखा। हम लोगों ने वह समय भी देखा है, मैं उसका चश्मदीद गवाह हूं। इसलिए, जब मैं खड़ा होकर इस पर बोल रहा हूं, तो मुझे इतनी खुशी हो रही है कि जिसके लिए मैं यह कह रहा हूं कि मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं, क्योंकि मैंने वह जो संघर्ष का काल था, उसको देखा है।

**हमने अटल जी का वक्तव्य देखा, हमने आडवाणी जी का संघर्ष देखा, जब लाठियां चार्ज हुईं, तो हमने वे भी देखीं, हमने साधु संतों का संघर्ष देखा, लेकिन वही भला, जो अंत भला**

हमने अटल जी का वक्तव्य देखा, हमने आडवाणी जी का संघर्ष देखा, जब लाठी चार्ज किया गया, तो हमने वे भी देखा, हमने साधु-संतों का संघर्ष देखा, लेकिन वही भला, जो अंत भला। वह अंत भला हुआ और हम एक लंबी प्रक्रिया के बाद इस कार्य को कर सके हैं।

मैं यहां पर यह कहना चाहूंगा कि सनातन धर्म ने और देश ने अपने धैर्य का भी पूरा परिचय दिया है। अनेक विपदाएं आईं, अनेक समस्याएं आईं, हर तरीके की मुसीबतें आईं, लेकिन जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम थे, उसी तरीके से तमाम मर्यादाओं को रखते हुए रामलला को विराजमान करने का काम भारत के लोगों ने धैर्य के साथ किया और भारतीय जनता पार्टी ने उसमें अपना योगदान दिया।

## मोदीजी के कर–कमलों से प्राण–प्रतिष्ठा

मुझे इस बात की भी खुशी है कि यह प्राण-प्रतिष्ठा हमारे सम्माननीय भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर-कमलों द्वारा हुई है। यह हम सबके लिए गौरव का विषय है। यह सबसे उचित घटना घटी, जब भारत का प्रधान सेवक, भारत का प्रधान प्रशासक, जो सांसारिक होने के बावजूद भी सारे यम-नियमों को मानता हुआ, एक संन्यासी का जीवन जीता हुआ प्राण-प्रतिष्ठा करता है, तो यह हम सबके लिए गौरव का विषय है। जब उनके कर-कमलों द्वारा प्राण-प्रतिष्ठा होती है, तो मुझे वह समय भी याद आता है— देखिए काल कैसे बदलता है, समय कैसे बदलता है और विचार भी कैसे बदलते हैं। एक वह समय था, जब एक प्रधानमंत्री सोमनाथ की प्राण-प्रतिष्ठा में जाना अपनी ग्लानि समझते थे और एक यह समय भी आया, जब रघुनाथ की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कर-कमलों द्वारा कार्य को संपन्न किया।

**एक वह समय था, जब एक प्रधानमंत्री सोमनाथ की प्राण-प्रतिष्ठा में जाना अपनी ग्लानि समझते थे और एक यह समय भी आया, जब रघुनाथ की प्राण-प्रतिष्ठा के लिए भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कर-कमलों द्वारा कार्य को संपन्न किया**

उनके बराबर का उचित व्यक्ति, प्रधान प्रशासक, प्रधान सेवक और उसके साथ-साथ पूरे यम-नियम — सांसारिक व्यक्ति रहते हुए भी एक संन्यासी

का जीवन जीते हुए अपना कर्म कर रहा है। गोविंद गिरी जी महाराज ने अपने वक्तव्य में इस बात को कहा भी है। उन्होंने कहा है कि 'यम' तो तीन दिन का था, लेकिन प्रधानमंत्री जी ने ग्यारह दिन का कठोर यम करने के बाद इस कार्य को पूर्ण किया।

11 दिनों तक जमीन पर सोना, नारियल पानी का सेवन करना, अनेक स्थान जो श्रीराम के जीवन से संबंधित थे, वहां जाना, चाहे वह गिलहरी का स्थान था या अन्य स्थान थे, सभी पूज्य स्थानों पर आदरणीय प्रधानमंत्री जी का जाना, 11 दिन का तप करना और उसके बाद अपने कर-कमलों द्वारा उस रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा करना, यह अपने आप में एक बहुत ऐतिहासिक समय और दिन को देखने का विषय बनता है, जिसे हमें ध्यान में रखना चाहिए।

मैं यहां यह भी कहना चाहूंगा कि यह भारत के लिए, हम सबके लिए और भारतीय जनता पार्टी के लिए यह राजनैतिक मुद्दा नहीं है। यह देश का मुद्दा है और हमने कभी इसमें से कोई 'पॉलिटिकल स्कोर' लेने की कोशिश नहीं की है। हमने इसमें से कोई पॉलिटिकल एडवांटेज लेने की कोशिश नहीं की है। मुझे याद है जब मैं युवा था, जब इस राज्यसभा में कुछ सदस्य होते थे और लोकसभा में हम दो थे, तब भी हम राम के लिए स्ट्रगल कर रहे थे और आज 303 हैं, तब भी हम राम के लिए स्ट्रगल कर रहे हैं। हमने वे दिन भी देखे हैं। फिर चाहे कोर्ट का वर्डिक्ट हुआ, पहले हाई कोर्ट और फिर सुप्रीम कोर्ट का हुआ और पांच जजों के द्वारा एकमत से फैसला हुआ। सभी लोगों ने फैसला किया। उसके बाद शिलान्यास हुआ। आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने शिलान्यास किया। फिर प्राण-प्रतिष्ठा हुई। किसी भी ओकेज़न पर, किसी भी समय पर कोई भी राजनैतिक वक्तव्य भारतीय जनता पार्टी ने नहीं दिया। हमने यह देश की अस्मिता को संभालकर किया है। We never gave a political statement. We

**जब मैं रामराज्य की बात करता हूं, तो संविधान में भी भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने राम को अंकित किया है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी रामराज्य की कल्पना की है**

never tried to take political advantage out of it. It was our conviction, it was our commitment. उस कमिटमेंट को पूरा करने के लिए हम लोगों ने हर तरीके से प्रयास किया और कभी भी हमने उसमें राजनीति नहीं की, किसी भी तरह का राजनीतिक बयान नहीं दिया। हमने इसकी परिकल्पना को पूरा किया है।

## 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास'

जब मैं रामराज्य की बात करता हूं, तो संविधान में भी भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने राम को अंकित किया है। हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी 'रामराज्य' की कल्पना की है और रामराज्य की कल्पना करने में हम लोगों ने हमेशा इस बात की चर्चा की है कि हम किस तरीके से गरीब लोगों की चिंता कर सकें और उनके बारे में सोच सकें। हम उनकी चिंता कर सकें, यह हमारे लिए आवश्यक है। आज मैं यह गौरव और गर्व के साथ कह सकता हूं कि प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में आज इस देश में शासन चल रहा है, तो हम रामराज्य की कल्पना को साकार करने के लिए लगे हैं और उसको आगे बढ़ा रहे हैं। मैं यह सिर्फ कहने के लिए नहीं कह रहा हूं। यह गांव, गरीब, वंचित, पीड़ित, शोषित, दलित, महिला, युवा, किसान— इन सबके सशक्तीकरण का, इन सबको ताकत देने का काम आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में उनकी नीतियों और उनके कार्यक्रमों ने किया है— उसको अमलीजामा पहनाया है, उसको ताकत दी है। हमने सभी जातियों को जोड़ने का प्रयास किया, तोड़ने का प्रयास नहीं किया। हमने सबको साथ लेकर चलने की बात की— 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास।'

> **सभी जातियों के लोग, सभी धर्मों के लोग, सभी वर्गों के लोग, जो गरीब हैं, उनकी चिंता की गई है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस तरह से रामराज्य की कल्पना को साकार किया है**

यदि मैं उज्ज्वला की बात करूं, तो क्या उसका लाभ किसी धर्म के लोगों को मिल रहा है, क्या किसी जाति के लोगों को मिल रहा है, क्या किसी जाति

की महिलाओं को मिल रहा है, क्या किसी वर्ग को मिल रहा है? वह सबके साथ और सबके विकास की स्पिरिट है, यह हमें समझना चाहिए। 'उजाला योजना', 'सौभाग्य योजना'— कभी हम लोगों ने 'सौभाग्य योजना' में उन ढाई करोड़ घरों को देखा है कि वे किस जाति के हैं? वह 'उजाला योजना'— हमने कभी सोचा है कि यह 18 हज़ार गांव किन जातियों के गांव हैं? यह हमने कभी नहीं सोचा है। सबके विकास के लिए, सबको आगे बढ़ाने के लिए उस काम को आगे बढ़ाने का काम किया है। 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना', अब जब मैं 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना' बोलता हूं, तो जो वह 80 करोड़ की जनता है, क्या वह किसी जाति की है, क्या वह किसी धर्म की है? सभी जातियों के लोग, सभी धर्मों के लोग, सभी वर्गों के लोग, जो गरीब हैं, उनकी चिंता की गई है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने इस तरह से रामराज्य की कल्पना को साकार किया है।

**आज हर चौथे महीने किसान के घर पर उसके बैंक अकाउंट में 2,000 रुपए जमा होते हैं। यह संख्या कितनी है! 11 करोड़ 78 लाख किसानों के अकाउंट में ये रुपए जमा होते हैं। लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा किसानों के खातों में जा चुके हैं**

आपको जानकर खुशी होगी कि आज 25 करोड़ लोग इसी प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के कारण गरीबी की रेखा से ऊपर उठ चुके हैं, उनको उसमें से निकलने का मौका मिला है।

अब मैं प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की बात बताऊंगा। किसानों की बात तो बहुत लोगों ने की, लेकिन कब किसान की चिंता हुई? आज हर चौथे महीने किसान के घर पर उसके बैंक अकाउंट में 2,000 रुपए जमा होते हैं। यह संख्या कितनी है! 11 करोड़ 78 लाख किसानों के अकाउंट में ये रुपए जमा होते हैं। लगभग 2.5 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा किसानों के खातों में जा चुके हैं। यह किसान की चिंता हुई।

इसी तरह से स्वच्छता अभियान है। मुझे याद है कि राममनोहर लोहिया जी बोला करते थे कि मुझे शर्म आती है, जब मेरी जीप चलती है, तो उसके

आगे मैं नेशनल हाईवे पर देखता हूं कि झुंड की झुंड महिलाएं लोटा लेकर अपने दैनिक नित्यकर्म के लिए जाती हैं। यह उन्होंने 1966 में कहा था। किसी ने चिंता नहीं की! जब लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छता अभियान की चर्चा की, तो लोगों ने खिल्ली उड़ाई, लेकिन उसी स्वच्छता अभियान ने आज 12 करोड़ बहनों को इज्जत घर दिया है, life with dignity दी है और महिलाओं का सशक्तीकरण हुआ है। हमने महिलाओं को मुख्यधारा में लाने का काम किया है। इसमें सिर्फ महिलाएं ही नहीं आईं, महिलाओं के साथ 12 करोड़ बच्चे भी आए, 12 करोड़ परिवार भी आए, life with dignity, जीने का अधिकार उनको मिला, यह भी हमको ध्यान में रखना चाहिए।

यहां जब मैं रामराज्य की कल्पना की बात करता हूं और जब मैं बोलता हूं कि सभी गरीब की चिंता होनी चाहिए, तो सभी लोगों की चिंता होनी चाहिए। यहां बहुत से मेंबर्स ऑफ पार्लियामेंट बैठे हैं, कभी ये एमएलए रहे होंगे। हम लोगों में से भी बहुत से लोग एमएलए रहे होंगे। हम क्या चिट्ठी लिखा करते थे? आप भी लंबे समय तक सांसद रहे। उन दिनों हम चिट्ठी लिखते थे कि प्रधानमंत्री जी, इस व्यक्ति के हार्ट का ऑपरेशन होना है, इसमें सवा लाख रुपए खर्च होने हैं, यह बहुत गरीब परिवार का है, इसकी आर्थिक सहायता की कोई व्यवस्था नहीं है, आप अपने प्रधानमंत्री राहत कोष से इसको 1.5 लाख रुपए देने की कृपा करें, अनुशंसा करें। ये चिट्ठियां हम लिखा करते थे। 10 चिट्ठियां लिखते थे, 12 चिट्ठियां लिखते थे, तो दो के लिए सैंक्शन होता था, 10 रह जाते थे, मालूम नहीं क्या होता था। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी ने कहा कि हमें कुछ बड़ा सोचना है। आज मुझे खुशी होती है कि 10 करोड़ 74 लाख परिवार, 55 करोड़ लोग, जो

**10 करोड़ 74 लाख परिवार, 55 करोड़ लोग, जो भारत की आबादी का 40 प्रतिशत बनता है, 40 per cent of Indian population, इनके 5 लाख रुपए की हर साल, सालाना गंभीर बीमारियों से लड़ने के लिए, इलाज करने के लिए आज व्यवस्था की गई है**

भारत की आबादी का 40 प्रतिशत बनता है, 40 per cent of Indian population, इनके 5 लाख रुपए की हर साल, सालाना गंभीर बीमारियों से लड़ने के लिए, इलाज करने के लिए आज व्यवस्था की गई है। कभी सोचा था आयुष्मान भारत! कौन लोग हैं ये ! मैं बार-बार बोलता हूं, ये गरीब लोग हैं। रेहड़ी वाला, फेरी वाला, रिक्शा वाला, ठेला वाला, सब्जी वाला, बस का ड्राइवर, बस का कंडक्टर, लिफ्ट मैन, क्लीनर, बाल काटने वाला, जूते का काम करने वाला— ऐसे गरीब लोग बेचारे जो अपनी गंभीर बीमारी का इलाज नहीं करा सकते थे, उनको आयुष्मान भारत में लाने का काम प्रधानमंत्री मोदी जी ने किया और वह भी हम सबके ध्यान में है।

इसी तरह से हर घर जल है। यह क्या एक तरीके से हम लोगों ने नई आजादी नहीं देखी? आप सब लोगों में बहुत से लोग शहर के रहने वाले होंगे। आप लोगों को शायद इसका एहसास नहीं होगा, लेकिन मैं तो पहाड़ी प्रदेश से आता हूं। वैसे तो महाराष्ट्र के भी बहुत से सूखे इलाके आपने देखे होंगे, गुजरात में भी देखे होंगे, बाकी सब जगह भी देखे होंगे, आपने राजस्थान में भी देखा होगा, आपने अन्य क्षेत्रों में भी देखा होगा, लेकिन मेरे पहाड़ी इलाके में बहनें दो-दो किलोमीटर पहाड़ से उतर कर नीचे आती थीं और एक घैला पानी लेकर फिर 3 किलोमीटर, 2 किलोमीटर ऊपर चढ़ती थीं और दिन का गुजारा करती थीं। यह भी जमाना हमने देखा है। मुझे खुशी होती है कि आज हर घर नल, हर घर जल— यह पहुंचाने का निर्णय लेकर इसको भी पूरा करने का काम किया गया है।

**1971 से लेकर 2014 तक बैंक के दरवाजे की चौखट को क्रॉस करने वालों की संख्या पौने 3 करोड़ थी, सिर्फ पौने 3 करोड़। आज 50 करोड़ से ज्यादा गरीब लोगों के बैंक के खाते खुले हैं**

जहां तक 'नारी शक्ति वंदन अधिनियम' की बात है, this Parliament waited for 30 years, and it is under Prime Minister, Shri Narendra Modi, that within three days 'नारी शक्ति वंदन विधेयक' पास हो गया और नारियों को वह शक्ति मिल गई, यह भी

हमने देखा।

अगर मैं किसान की बात करूं, fertilizers की बात करूं, तो किसी के ध्यान में ही नहीं था कि neem-coated Urea के माध्यम से हम किसानों को ताकत दे सकते हैं। अब तो हम nano-fertilizer की तरफ जा रहे हैं, जहां एक बोरी की जगह पर एक छोटी सी बोतल में वह फर्टिलाइजर आयेगा। हम एक क्रांति की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। यहां जन-धन योजना का मजाक उड़ाया गया। मैं यहां on record यह बात लाना चाहता हूं कि Mrs. Gandhi brought nationalization of banks in 1971-72 और कहा था कि गरीबी की चिन्ता होगी, गरीबों की चिन्ता होगी और बैंक के दरवाजे गरीबों के लिए खुले रहेंगे। मैं यहां on record यह बात रखना चाहता हूं। 1971 से लेकर 2014 तक बैंक के दरवाजे की चौखट को क्रॉस करने वालों की संख्या पौने 3 करोड़ थी, सिर्फ पौने 3 करोड़। Madam Nirmala Sitharamanji may correct me, आज 50 करोड़ से ज्यादा गरीब लोगों के बैंक के खाते खुले हैं। आज यह परिस्थिति है। यह इस बात को बताता है कि इन जन-धन खातों के माध्यम से हमारी 25 करोड़ बहनों को कोरोना के टाइम में 500-500 रुपया उनके घरों में, उनके खातों में पहुंचा। Unimaginable! हम लोगों ने वह भी देखा। उसी तरीके से श्रमिक लॉज़ की दृष्टि से जो कल्याण हुआ है, उसको भी हमने देखा है। अनेक स्किम्स के माध्यम से सारी चीजें हमारे सामने आयी हैं। जब मैं 'रामराज्य' की कल्पना की बात करता हूं, तो मैं एक और बात on record लाना चाहता हूं। हमारे विपक्ष के बहुत से विद्वान नेतागण भी यहां बैठे हैं, सब लोग बैठे हैं। कोरोना के टाइम में दुनिया के देशों ने अपने आपको असहज और असहाय समझा और देखा, लेकिन हमारा भारत अकेला ऐसा देश था, जिसने प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में

**कोरोना के टाइम में दुनिया के देशों ने अपने आपको असहज और असहाय समझा और देखा, लेकिन हमारा भारत अकेला ऐसा देश था, जिसने प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में decisive decision लेकर इस देश को कोरोना से बचाने का काम किया**

decisive decision लेकर इस देश को कोरोना से बचाने का काम किया। West could not decide whether economy is important or humanity is important; West could not decide. In the East, Japan and other countries, even Australia, could not decide. But India could decide. हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि 'जान है, तो जहान है' और इसीलिए समय पर लॉकडाउन लगाया, देश को तैयार किया। जब देश तैयार हो गया, तो हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा कि 'जान भी है और जहान भी है। अब दोनों की चिन्ता करनी है।'

मुझे स्वास्थ्य मंत्री रहने का सौभाग्य मिला है। मुझे मालूम है कि इस देश में National Pulse Polio Programme बनने में 26-27 साल लग गए, Tuberculosis के लिए प्रोग्राम बनने में 28 साल लग गए, Japanese Encephalitis का इंजेक्शन आने में 100 साल लग गए। जापान में 1906 में उसका इंजेक्शन आ गया था, लेकिन भारत में वह 2006 में पहुंचा और 2014 में उसके लिए National Programme बना। यहां यह स्थिति आकर खड़ी रही, लेकिन जब कोरोना आया, तो 9 महीने के अन्दर प्रधानमंत्री जी ने इस देश को एक नहीं, बल्कि दो-दो वैक्सीन्स दीं और डबल डोज़ के साथ बूस्टर लगा कर 220 करोड़ लोगों को उस दृष्टि से सुरक्षित किया गया।

**धारा 370 के बारे में किसी ने कहा था कि यह घिस-घिस कर घिस जाएगी, लेकिन उनकी राजनीति घिस गयी, परन्तु धारा 370 नहीं घिसी। उसको घिसने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी की इच्छाशक्ति लगी, तब जाकर धारा 370 गयी**

मैं ये सारी बातें इसलिए कहना चाहता हूं, क्योंकि हम 'रामराज्य' की कल्पना को लेकर चले हैं। धारा 370 के बारे में किसी ने कहा था कि यह घिस-घिस कर घिस जाएगी, लेकिन उनकी राजनीति घिस गयी, परन्तु धारा 370 नहीं घिसी। उसको घिसने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी की इच्छाशक्ति लगी, तब जाकर धारा 370 गयी। उसी तरीके से ट्रिपल तलाक

का मामला है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा था— हमारे सामने शाहबानो का केस भी है। आज हम 'रामराज्य' की तरफ आगे बढ़ते हैं, तो हमें दिखता है कि ट्रिपल तलाक वाले अधिनियम से हमारी मुस्लिम बहनों को भी आज़ादी के साथ जीने का अधिकार मिला है। इस बात को भी हम ध्यान में रखना चाहते हैं।

मैं आपका ज्यादा समय लेना नहीं चाहता। मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि यह एक ऐतिहासिक पल है, जब रामलला विराजे हैं। यह जो spiritual conscience का resurgence हुआ है, यह जो cultural conscience का resurgence हुआ है और यह जो आध्यात्मिक चेतना का resurgence हुआ है, इस 22 जनवरी को सदा-सदा याद किया जाएगा।

इसमें हम सब को प्रधानमंत्री मोदी जी की इच्छाशक्ति और दृढ़शक्ति का भी परिचय मिलेगा, यह मैं कहना चाहूंगा। आज खुशी की घड़ी है। मैं एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि हमें फैसला करना चाहिए। अब कई बार लोगों से बोलते हैं, तुमने 22 जनवरी को बीजेपी इवेंट बना दिया, बीजेपी इवेंट बना दिया। मैं पूछता हूं कि मैं भारतीय जनता पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष हूं, मैं भी उस कार्यक्रम में कहां था? वहां बीजेपी का कौन था? वहां भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी थे। वे तो भारत के प्रधानमंत्री हैं। वह काम तो न्यास ने किया है। It was not a BJP event. लेकिन हां, अगर किसी का कर्म उसको कचोटे और वह उसमें शामिल होने से रह जाए, तो मैं क्या करूं, हम क्या कर सकते हैं? इस दुविधा के बारे में हमें सोचना चाहिए।

मैं अन्त में अपनी बात को समाप्त करने से पहले कहूंगाः

**'राम नाम कड़वा लगे, मीठे लगे दाम**
**दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम।'**
**ज़ोर से बोलो — जय सियाराम।**

❑❑❑

# भारत के गौरवमय युग की यह शुरुआत है: अमित शाह

**केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 10 फरवरी, 2024 को लोकसभा में ऐतिहासिक राम मंदिर के निर्माण एवं श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा पर नियम 193 के तहत चर्चा में भाग लिया। इस दौरान श्री अमित शाह ने कहा कि 22 जनवरी, 2024 का दिन दस हजार साल का ऐतिहासिक दिन बनने जा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि भगवान राम एवं राम चरित्र के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती। यहां हम अपने सुधी पाठकों के लिए संबोधन का सम्पूर्ण पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:**

माननीय अध्यक्ष जी, मैं सबसे पहले आपको धन्यवाद देना चाहता हूं। आज़ादी के बाद राष्ट्र के जीवन में जो कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव आए हैं, उनमें से एक प्रस्ताव श्रीराम जन्मभूमि पर मन्दिर के निर्माण का है। आपने मुझे उस पर अपने विचार रखने का मौका दिया, इसके लिए मैं हृदय से आपका धन्यवाद करना चाहता हूं।

मैं देश की 140 करोड़ जनता की ओर से भी आसन का, स्पीकर साहब का धन्यवाद करना चाहता हूं क्योंकि यह सदन नियम से तो चलता ही है, हर चर्चा नियमों से बंधी हुई होती है, संविधान से बंधी हुई होती है। परन्तु एक मायने में यह सदन जन-चेतना का, जनता की आकांक्षाओं का और जनता की इच्छाओं का प्रवक्ता बनने का भी इस सदन का दायित्व है और आज वही हो रहा है। 140 करोड़ जनता के देश में और दुनिया भर में बैठे हुए राम भक्तों के लिए, जो 22 जनवरी के बाद अद्भुत आध्यात्मिक चेतना का अनुभव कर रहे हैं, उनको वाचा देने के लिए आपने मुझे समय दिया, इसके लिए देश हमेशा आपका आभारी रहेगा।

मैं आज किसी का जवाब नहीं दूंगा। आज मैं मेरे मन की बात और देश की जनता की आवाज को इस सदन के सामने रखना चाहता हूं, जो सालों से कोर्ट के कागजों में दबी हुई थी। नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद

उसको आवाज भी मिली, अभिव्यक्ति भी मिली।

## 22 जनवरी–समग्र भारत की आध्यात्मिक चेतना के पुनर्जागरण का दिन

यह 22 जनवरी का दिन, भले ही कुछ लोग कुछ भी कहें, मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूं कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र सालों के लिए ऐतिहासिक दिन बनने वाला है, यह सबको समझकर चलना चाहिए। जो इतिहास को पहचानते नहीं हैं, ऐतिहासिक पलों को पहचानते नहीं, वे अपने अस्तित्व को, अपने वजूद को कहीं न कहीं खो देते हैं। मैं आज फिर से एक बार कहने वाला हूं कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र से भी अधिक सालों तक इस देश का ऐतिहासिक दिन रहने वाला है।

22 जनवरी का दिन, 1528 से शुरू हुए एक संघर्ष और अन्याय के सामने लड़ाई के एक आन्दोलन के अंत का दिन है। 1528 से चालू हुई यह न्याय की लड़ाई यहां पर समाप्त हो गई है।

**मैं आज फिर से एक बार कहने वाला हूं कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र से भी अधिक सालों तक इस देश का ऐतिहासिक दिन रहने वाला है**

22 जनवरी का दिन करोड़ों भक्तों की आशा, आकांक्षा और सिद्धि का दिन है। आज उनकी आशाएं, आकांक्षाएं सिद्ध हुई हैं।

यह 22 जनवरी का दिन भारत की, समग्र भारत की, मैं चाहूंगा कि 'समग्र भारत' पर पूरा सदन गौर करे, 22 जनवरी का दिन समग्र भारत की आध्यात्मिक चेतना के पुनर्जागरण का दिन आज इतिहास में बन चुका है।

22 जनवरी का दिन महान भारत की यात्रा की शुरुआत का दिन है। 22 जनवरी के दिन मां भारती को विश्वगुरु के मार्ग पर ले जाने को प्रशस्त करने वाला दिन बनने वाला है।

इस देश की कल्पना राम और राम चरित्र के बगैर कर ही नहीं सकते हैं। जो इस देश को पहचानना चाहते हैं, जानना चाहते हैं, जीना चाहते हैं, राम और रामचरितमानस के बगैर वे जी ही नहीं सकते। राम का चरित्र और

राम, ये देश के जनमानस का प्राण है, यह सबको समझना चाहिए, सबको स्वीकारना चाहिए।

इसीलिए हमारे संविधान की पहली प्रति से लेकर महात्मा गांधी के आदर्श राज्य की कल्पना को रामराज्य का नाम दिया गया, संविधान में भी राम दरबार को स्थान दिया गया।

जो लोग राम के अलावा भारत की कल्पना करते हैं, वे भारत को नहीं जानते हैं, वे हमारे गुलामी के काल का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राम व्यक्ति नहीं हैं, राम प्रतीक हैं, राम करोड़ों लोगों के प्रतीक हैं कि आदर्श जीवन कैसे जीना चाहिए। इसीलिए उनको मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है। राम का राज्य किसी एक धर्म, एक संप्रदाय विशेष के लिए नहीं है, आदर्श राज्य कैसा होना चाहिए, राम का राज्य इसका प्रतीक है, न केवल भारत, बल्कि समग्र दुनिया के देशों के लिए बना हुआ है। इसलिए मैं मानता हूं कि राम और राम के चरित्र को फिर से प्रस्थापित करने का काम 22 जनवरी को हुआ है, मोदी जी के हाथ से हुआ है, यह इस देश के लिए सौभाग्य का विषय है।

**भारत की संस्कृति और रामायण को अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है। कई भाषाओं में, कई प्रदेशों में और कई प्रकार के धर्मों में भी रामायण का जिक्र, रामायण का अनुवाद, रामायण से बनी परम्पराएं और रामायण को अपनी राष्ट्रीय चेतना का एक आधार बनाने का काम हुआ है**

हम सब उन सौभाग्यशाली लोगों में से हैं, जो 1528 से वहां पर राम मंदिर देखना चाहते हैं। पीढ़ियां चली गईं, हजारों-लाखों लोग शहीद हुए, संघर्ष किया, आन्दोलन किए, मगर यह दिन देखना स्वप्न में नहीं आया, आज हम सब बहुत सौभाग्यशाली हैं कि इस दिन को हम देख सकते हैं।

## रामायण : राष्ट्रीय चेतना का आधार

भारत की संस्कृति और रामायण को अलग करके देखा ही नहीं जा सकता है। कई भाषाओं में, कई प्रदेशों में और कई प्रकार के धर्मों में भी रामायण

का जिक्र, रामायण का अनुवाद, रामायण से बनी परम्पराएं और रामायण को अपनी राष्ट्रीय चेतना का एक आधार बनाने का काम हुआ है।

कई सारी रामायणों का उल्लेख है। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण, आध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अवधी में रामचरितमानस, उड़िया में 13 प्रकार की रामायण, तेलुगु में रंगनाथ रामायण, रघुनाथ रामायण, कन्नड में कुमुन्देदु रामायण, तोरवे रामायण, बतलेश्वर रामायण, असमिया में कथा रामायण, सप्तकांड रामायण और शंकरदेव ने भी बोरगीत के अंदर रामायण का वर्णन किया है। बांग्ला में भी रामायण मिलेगा। कश्मीर में भी राम अवतार चरित मिलेगा। बौद्ध परम्पराओं में भी अनामक जातक में रामायण का जिक्र मिलेगा। मैथिली में भी रामायण है। पंजाबी में भी गोविंद रामायण है और इतना ही नहीं, ओवैसी साहब चले गए मुल्ला मसीही ने भी रामायण मसीही लिखकर सबके लिए इस आदर्श को प्रस्थापित किया है। कई सारे देशों में भी रामायण को स्वीकारा है और एक आदर्श ग्रंथ के रूप में प्रस्थापित किया है। विदेशों में नेपाल, जावा, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, तिब्बत— इन सभी देशों की भाषाओं में रामायण का अनुवाद भी हुआ है और उनसे प्रेरणा भी ली जाती है। हमारे यहां आदिवासी जीवन भी एक प्रकार से अलग संस्कृति, अलग परम्पराओं से रचा-बसा है। ऊरांव में, बोडो में, संथाल में, संकाल में, बिरहोर में और छोटानागपुर में— सभी जगह स्थानीय भाषाओं में रामायण का अनुवाद भी हुआ और रामायण के आधार पर अपने जीवन को आदर्श बनाने का काम भी हुआ।

**कई सारे देशों में भी रामायण को स्वीकारा है और एक आदर्श ग्रंथ के रूप में प्रस्थापित किया है। विदेशों में नेपाल, जावा, इंडोनेशिया, कम्बोडिया, तिब्बत— इन सभी देशों की भाषाओं में रामायण का अनुवाद भी हुआ है और उनसे प्रेरणा भी ली जाती है**

राम और रामायण से अलग इस देश की कल्पना हो ही नहीं सकती है। राष्ट्र की इच्छा की परिपूर्ति सम्माननीय मोदी जी के हाथ से 22 जनवरी को अभिजीत मुहूर्त में हुई है। यह लड़ाई वर्ष 1528 से लड़ी जा रही है। दशकों

तक यह लड़ाई चली। लगभग-लगभग वर्ष 1858 से कानूनी लड़ाई चल रही है, जब से अंग्रेजों का शासन था। 330 साल के बाद कानूनी लड़ाई का आज अंत हुआ है और रामलला अपने गर्भ-गृह के अंदर विराजमान हुए हैं। वर्ष 1528 से अब तक जो लम्बा आंदोलन चला, उसकी समाप्ति हुई है और देश की आध्यात्मिक चेतना की जागृति हुई है। मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि इस आंदोलन से अनभिज्ञ होकर कोई इस देश के इतिहास को पढ़ ही नहीं सकता है। आज से नहीं, वर्ष 1528 से हर पीढ़ी ने इस आंदोलन को किसी न किसी स्वरूप से वाचा दी और यह मामला लम्बे समय तक अटका रहा, भटका रहा, लटकता रहा। आज मोदी जी के समय में ही इसे परवान चढ़ना था, इस स्वपन को सिद्ध होना था और आज देश स्वपन सिद्ध होता देख रहा है।

> हमने पालमपुर कार्यकारिणी के अंदर एक प्रस्ताव पारित करके कहा था कि राम मंदिर का निर्माण हो, इसे किसी धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, यह देश की चेतना की पुनर्जागृति का आंदोलन है

## पुनर्जागृति का आंदोलन है

रामजन्म भूमि का जो इतिहास है, यह बहुत लम्बा है। अनेक राजाओं, संतों, निहंगों, अलग-अलग संगठनों और कानूनी विशेषज्ञों ने इस लड़ाई में योगदान दिया है। मैं आज वर्ष 1528 से 22 जनवरी, 2024 तक की सम्पूर्ण कानूनी, युद्धों की और आंदोलनों की लड़ाई को और सभी योद्धाओं को बहुत विनम्रता से स्मरण करना चाहता हूं और उनकी लड़ाई आज जब समाप्त हुई है, तब मुझे विश्वास है कि वे जहां भी होंगे, वे बड़े आनंद की अनुभूति करते होंगे, अपनी श्रद्धा को चरितार्थ करने की अनभूति करते होंगे। गिलहरी के समान कई लोगों ने अपना योगदान दिया और ये राम सेतु जो बनना था, वर्ष 1528 से 22 जनवरी, 2024 तक का इस सेतु का भूमि पूजन भी नरेन्द्र मोदी जी ने किया और प्राण-प्रतिष्ठा भी नरेन्द्र मोदी जी के हाथ से हुई।

1990 में जब इस आंदोलन ने गति पकड़ी, उससे पहले से ही भारतीय जनता पार्टी का देश की जनता को यह वायदा था। हमने पालमपुर कार्यकारिणी

के अंदर एक प्रस्ताव पारित करके कहा था कि राम मंदिर का निर्माण हो, इसे किसी धर्म के साथ नहीं जोड़ना चाहिए, यह देश की चेतना की पुनर्जागृति का आंदोलन है, इसलिए हम राम जन्मभूमि को मुक्त कराकर, कानूनी रूप से मुक्त कराकर वहां राम मंदिर की स्थापना करेंगे।

अब इस देश में प्रॉब्लम क्या है? जब चुनाव के घोषणा-पत्र में हम इसे लेते हैं तो वे कहते हैं कि चुनावों में वोट प्राप्त करने के लिए हमने लिया, यह चुनावी वादा है, यह भाजपा ऐसे ही वादे करती है। चाहे अनुच्छेद-370 हो, राम जन्मभूमि हो, यूनिफॉर्म सिविल कोड हो, ट्रिपल तलाक समाप्त करना हो, ये कहते हैं कि आप ऐसे ही वादे करते हैं और यह वोट प्राप्त करने का जरिया होता है। जब हम इसे पूरा कर देते हैं तो वे इसकी बड़ी खिलाफत करते हैं। मैं आज भी कहता हूं कि भारतीय जनता पार्टी और हमारे नेता नरेन्द्र मोदी जी जो कहते हैं, वह करते हैं। यह हमारी पार्टी का चरित्र है और यह कोई छिपी हुई बात नहीं है।

**दुनिया में एक भी देश ऐसा नहीं है जहां के बहुसंख्यक समाज ने अपनी आस्था का निर्वहन करने के लिए इतनी लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी। हमने राह देखी है, सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ी है और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद वहां पर आज भव्य राम मन्दिर बना है**

## किस चीज का आक्रोश है?

किस चीज का आक्रोश है? हम वर्ष 1986 से यह कह रहे हैं कि वहां एक भव्य राम मन्दिर बनना चाहिए, संवैधानिक तरीके से बनना चाहिए। कुछ लोगों ने यहां और बाहर भी, मीडिया के सामने प्रतिक्रिया व्यक्त की। वे कानून की दुहाई देते हैं। मैं उनसे पूछना चाहता हूं कि क्या सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों की खण्डपीठ के जजमेंट से आप वास्ता रखते हैं या नहीं रखते हैं? क्या आप भारत के संविधान से वास्ता रखते हैं या नहीं रखते हैं? अगर किसी ने सुप्रीम कोर्ट की अवहेलना करके वहां पर मन्दिर बनाया होता तो आप कुछ भी कह सकते थे, मगर जब देश की सर्वोच्च अदालत के पांच जजों की खण्डपीठ ने, और जिसकी अध्यक्षता स्वयं चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया और आने वाले चार चीफ जस्टिस कर रहे

थे, ऐसी महत्वपूर्ण बेंच ने जब यह निर्णय लिया, तब आप इससे कैसे कन्नी काट सकते हैं? अगर निर्णय पसन्द हो तो स्वीकार कर लेना, सुप्रीम कोर्ट का सम्मान करना और अगर कोई निर्णय पसन्द न आए तो सुप्रीम कोर्ट को भी भला-बुरा कहना, यह ठीक नहीं है। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय ने आज पूरी दुनिया में भारत के पंथनिरपेक्ष चरित्र को उजागर किया है। दुनिया में एक भी देश ऐसा नहीं है जहां के बहुसंख्यक समाज ने अपनी आस्था का निर्वहन करने के लिए इतनी लम्बी कानूनी लड़ाई लड़ी। हमने राह देखी है, सुप्रीम कोर्ट में लड़ाई लड़ी है और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद वहां पर आज भव्य राम मन्दिर बना है।

जो ऐसा बोल रहे हैं, उन्हें भी सब मालूम है कि क्यों बोल रहे हैं। मैं आज फिर से यह कहना चाहता हूं, हमारे गुजरात में एक कहावत है कि 'हवन में हड्डी नहीं डालनी चाहिए।' जब पूरा देश आनन्द में डूबा है, पूरे देश में जब आध्यात्मिक चेतना की जागृति का अनुभव हो रहा है तो आप इसका स्वागत कर लीजिए, इसके साथ जुड़ जाइए। इसी में सबका भला है और देश का भी भला है।

**आडवाणी जी ने सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा भी की। इसके साथ-साथ निहंगों द्वारा शुरू की हुई लड़ाई को अशोक सिंघल जी चरम सीमा पर ले गए, आडवाणी जी ने जन-जागृति की और मोदी जी ने जन-आकांक्षा की पूर्ति करके एक आध्यात्मिक चेतना का जागरण कर दिया**

## स्थगित पड़े हुए मामले को नरेन्द्र मोदी जी ने सुलझाया

एक लम्बी लड़ाई के बाद स्थगित पड़े हुए मामले को नरेन्द्र मोदी जी ने सुलझाया। लम्बे समय के बाद और कांग्रेस के बगैर किसी दल को पहली बार, जब देश की जनता ने युग परिवर्तन करने के लिए पूर्ण बहुमत के साथ मोदी जी को प्रधानमंत्री बनाया, तब से यह लड़ाई शुरू हुई।

वर्ष 2014 से वर्ष 2019 तक राम जन्मभूमि मन्दिर की लड़ाई चली। इसमें बहुत साल लगे। उसमें उसके लाखों पेजेज का अनुवाद हुआ। अनुवाद होकर वह कोर्ट के सामने गया। बीच में चुनाव आ गया। कोर्ट ने माना कि

चुनाव के वक्त अगर फैसला देंगे तो शायद इसे अलग दृष्टि से देखा जाएगा। कोई बात नहीं। चुनाव के बाद फिर से मोदी जी आ गए और फिर केस चला। अंततोगत्वा, जब कोर्ट ने न्याय किया, तब 5 अगस्त, 2020 को मोदी जी ने इसकी नींव रखकर इसकी शुरुआत की।

यह जो वर्ष 2020 से वर्ष 2024 तक की यात्रा है, उस यात्रा को भी समझना चाहिए। यह राम जन्मभूमि का आंदोलन ऐसे ही नहीं चला। इसके साथ हर गांव, हर घर में करोड़ों रामभक्त, भारतीय जनता पार्टी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ समेत अनेक संगठन घर-घर गए, शिला लेकर गए, पूजा की और उस पत्थर को राम मन्दिर की शिला बनाकर अयोध्या तक पहुंचाने का काम किया। करोड़ों लोगों ने अपनी श्रद्धा, अपनी इच्छा संवैधानिक तरीके से, शांतिपूर्ण तरीके से अयोध्या पहुंचायी और सुप्रीम कोर्ट ने जब जजमेंट दे दिया, निर्णय दे दिया, तब जाकर राम मन्दिर के निर्माण की शुरुआत हुई।

यह पूरा आंदोलन, जब भी दुनिया का इतिहास लिखा जाएगा, एक डेमोक्रैटिक वैल्यू के रूप में देखा जाएगा कि कोई एक देश, अपने बहुसंख्यक समाज की धार्मिक विश्वास की पूर्ति के लिए इतने समय धैर्य रखकर सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाता रहे और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद सौहार्दपूर्ण वातावरण में उसकी पूर्ति हो

आडवाणी जी ने सोमनाथ से अयोध्या तक की यात्रा भी की। इसके साथ-साथ निहंगों द्वारा शुरू की हुई लड़ाई को अशोक सिंघल जी चरम सीमा पर ले गए, आडवाणी जी ने जन-जागृति की और मोदी जी ने जन-आकांक्षा की पूर्ति करके एक आध्यात्मिक चेतना का जागरण कर दिया।

यह पूरा आंदोलन, जब भी दुनिया का इतिहास लिखा जाएगा, एक डेमोक्रैटिक वैल्यू के रूप में देखा जाएगा कि कोई एक देश, अपने बहुसंख्यक समाज की धार्मिक विश्वास की पूर्ति के लिए इतने समय धैर्य रखकर सुप्रीम कोर्ट में गुहार लगाता रहे और सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट आने के बाद सौहार्दपूर्ण वातावरण में उसकी पूर्ति हो। यह बहुत बड़ी बात है और मैं मानता हूं कि यह

मोदी जी के नेतृत्व के बगैर संभव नहीं था।

मैं इतना ही कहना चाहता हूं कि जब राम मंदिर का निर्माण हो रहा था, तब और जब जजमेंट आया तब, कई लोग कयास लगा रहे थे, कई लोग अनुमान लगा रहे थे कि इस देश में रक्तपात हो जाएगा, इस देश में दंगे हो जाएंगे, इस देश में धर्म-धर्म के बीच में बड़े विवाद होंगे। मगर मैं आज इस सदन को कहना चाहता हूं कि यह भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, नरेन्द्र मोदी जी इस देश के प्रधानमंत्री हैं। कोर्ट के जजमेंट को भी जय-पराजय की जगह सबके मान्य न्यायालय के आदेश में परिवर्तित करने का काम मोदी जी के दूरदर्शी विचार ने किया है। उसके बाद जब समय आया, निर्माण के बाद समय आया, जब उनको न्योता मिला कि वे आ कर भूमि पूजन करें। वे 130 करोड़ जनता के जनप्रतिनिधि हैं। न्यास ने उनको जनता के प्रतिनिधि के नाते शिलान्यास करने का जब मौका दिया, तब मोदी जी का जो पूरा आचरण था, इसको ध्यान से देखना चाहिए। वह आचरण आने वाले अनेक सैकड़ों सालों तक दुनिया के सामने रहेगा और दुनिया के सामने इससे कई लोगों को प्रेरणा भी मिलेगी। हम सबने, आचार्य गोविंद देव गिरी जी ने जो वक्तव्य दिया, वह सुना है। मोदी जी को जब मौका मिला तब उन्होंने रामानंदी संप्रदाय और वैष्णव संतों से पूछा कि प्राण-प्रतिष्ठा करनी है, किसी संसारी को करनी है तो इसके यम-नियम, इसके लिए किस प्रकार की उपासना करनी चाहिए। जो संतों की ओर सुझाया गया, उससे भी अनेक गुना कठोर, 11 दिनों का व्रत इस देश के प्रधानमंत्री ने किया। 11 दिनों तक शय्या पर नहीं सोना, 11 दिनों तक केवल नारियल पानी के साथ उपवास करना, 11 दिनों तक पूरा समय रामभक्ति में रचे-बसे रहना और हर सांस को राम के साथ जोड़कर, राममय बनकर प्राण-प्रतिष्ठा करना।

**कोर्ट के जजमेंट को भी जय-पराजय की जगह सबके मान्य न्यायालय के आदेश में परिवर्तित करने का काम मोदी जी के दूरदर्शी विचार ने किया है**

उन 11 दिनों में मां शबरी, गिलहरी, वानर, भालू, जटायु— इन सब के साथ जुड़े हुए देश भर में जो राम के स्थान थे, वहां जाकर राम के काज

के लिए गिलहरी जैसा भी योगदान देने वालों को श्रद्धापूर्वक प्रणाम करने का काम प्रधानमंत्री जी ने किया। जब राम मंदिर की भूमि-पूजन का समय आया, कोई पॉलिटिकल नारे नहीं लगाए गए। न मोदी जी ने इसका नेतृत्व पॉलिटिकली किया और न हमारी पार्टी ने किया। हर रोज राम का एक भजन अलग-अलग भाषा में ट्वीट कर के एक भक्ति का आंदोलन शुरू किया।

इस देश में कई सारे भक्ति के आंदोलन खड़े हुए। ढेर सारे आंदोलन खड़े हुए। इस देश में भक्ति का आंदोलन कोई नया नहीं है। मीरा ने चलाया, गुजरात में नरसी मेहता ने चलाया, रामानंद ने चलाया, एकनाथ और ज्ञानेश्वर ने चलाया, शंकरदेव और माधवदेव ने असम में चलाया, चैतन्य महाप्रभु ने चलाया, समर्थ रामदास ने चलाया। इन सभी भक्ति आंदोलनों ने समय-समय पर देश को मजबूत करने का काम किया है।

## सनातन धर्म के प्रति सबकी आस्था

सनातन धर्म को टिकाने का काम किया है। सनातन धर्म के प्रति सबकी आस्था को बढ़ाने का काम किया है। घनघोर अंधेरी रात में एक ध्रुवतारे की तरह भक्ति आंदोलन ने देश के जनमानस का नेतृत्व किया। भारत की रक्षा में 10 सिख गुरुओं ने अनेक प्रकार के बलिदान दिये हैं। एक दशम पिता ने तो अपना सर्वस्व दान कर दिया। इस प्रकार के त्याग की भी इस देश की परंपरा रही है। इस समग्र भारत के हजारों साल लंबे सांस्कृतिक और राजनीतिक इतिहास में एक शासक ने, जनता के एक व्यक्ति ने, जनता के एक प्रतिनिधि ने अपने यम, नियम, तप और उपासना से भक्ति चेतना की जागृति की तो इसकी मात्र घटना नरेन्द्र मोदी जी ने की। मैं तो स्वयं अनुभव कर रहा हूं। मैं उस दिन दिल्ली के लक्ष्मी नारायण मंदिर (बिड़ला मंदिर) में बैठा था। वहां जो जनता थी, जो लोग थे, उन सबकी आंखों में आंसू थे। पूरा देश राममय हो गया था

> **जब संघर्ष चला, तब 'जय श्री राम' चला और मंदिर बना तो 'जय सियाराम' हो गया। संघर्ष से भक्ति की यात्रा पूरे देश को आगे ले जाने वाली यात्रा है**

और 'जय श्री राम' के नारे लगा रहा था।

मोदी जी ने बड़ी शालीनता के साथ विजय-पराजय के किसी भाव के बगैर जय श्री राम के युद्ध के नारों से, पूरी दुनिया जानती है, 'जय श्री राम', श्रीराम की वानर सेना का युद्ध का घोष था, इसे पूरी दुनिया जानती है। जब संघर्ष चला, तब 'जय श्री राम' चला और मंदिर बना तो 'जय सियाराम' हो गया। संघर्ष से भक्ति की यात्रा पूरे देश को आगे ले जाने वाली यात्रा है।

इतने चेतनामय वातावरण के अंदर भी विभाजन की बात करने वाले लोगों से मेरा करबद्ध निवेदन है कि आप समय को पहचानो, एकता के संदेश को स्वीकारो और आगे देखकर चलना शुरू करो, इसी में भारत की और हम सब की भलाई है।

यह बहुत बड़ा संदेश मोदी जी ने दिया है। मैं फिर से एक बात कहना चाहता हूं कि जिसने संन्यास नहीं लिया है, जो संन्यासी नहीं है, जो किसी पंथ-संप्रदाय का उपदेशक नहीं है, ऐसा व्यक्ति और जो देश का शासक है, वह प्रधानमंत्री है, प्रधान सेवक है, ऐसे व्यक्ति की भक्ति और आध्यात्मिक चेतना को लेकर, पूरी दुनिया में ऐसी मिसाल शायद ही कहीं मिलेगी।

**मोदी जी ने एक ऐसा नेतृत्व दिया, जिसने अनेक समय पर नेतृत्व के गुण क्या होते हैं, इसका परिचय देने का काम किया**

मैं यह जरूर कहना चाहता हूं। इस सदन में खड़े होकर गौरव के साथ कहना चाहता हूं कि मोदी जी मेरे नेता हैं, मेरी पार्टी के नेता हैं, मेरी पार्टी के प्रमुख नेता हैं। मोदी जी ने एक ऐसा नेतृत्व दिया, जिसने अनेक समय पर नेतृत्व के गुण क्या होते हैं, इसका परिचय देने का काम किया। अच्छे समय में भी किस प्रकार से संयम रखना चाहिए, इसका एक उदाहरण स्थापित करने का काम किया और हर समय पर निर्भयता के साथ, संवेदनशील, सजग और जन भावनाओं को समर्पित नेतृत्व कैसा होता है, इसका उदाहरण दिया। इनके 10 साल के कालखंड के अंदर अनेक प्रकार के पड़ाव आए हैं। यह भी राम जन्मभूमि के आंदोलन जैसा ही पड़ाव रहा है, क्योंकि जो गड्ढे ये खोदकर गए थे, उस गड्ढे को भरकर उसमें महान भारत की

इमारत बनाना, इस राम मंदिर की यात्रा से कोई कम यात्रा नहीं है।

सबसे पहले मैं कहता हूं कि आर्थिक क्षेत्र के अंदर इन्होंने जो बदहाली की थी, जो पॉलिसी पैरालाइसिस वाली गवर्नमेंट थी, सैंकड़ों पॉलिसीज बनाकर आज हम 11वें नंबर से 5वें पर हमारे अर्थतंत्र को ले जाकर, एक नीति के आधार पर चलने वाला राज्य, नीति बनाने वाला नेता कैसा होता है, उसका उदाहरण दिया। जब कोविड आया तो भयभीत हुए बगैर सरकार की मशीनरी कम पड़ जाएगी, जब तक यह आंदोलन पूरा देश नहीं लड़ेगा, इससे हम नहीं लड़ पाएंगे। इसे जानते हुए, एक मोर्चे पर वैक्सीन के इनोवेशन का काम चालू रहा, दूसरे मोर्चे पर हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर का अपग्रेडेशन का काम चालू रहा, तीसरे मोर्चे पर हर गरीब के घर में अनाज पहुंचाने का काम चालू रहा, चौथे मोर्चे पर कोविड के रोगियों की जो सेवा कर रहे थे, उनका नेतृत्व करने का काम चालू रहा और पांचवें मोर्चे पर जनता कर्फ्यू, दीया जलाना, थाली बजाना, इस पर हंसने वाले आज रोड पर घूमते हैं, लेकिन उनको मालूम नहीं है कि पूरी दुनिया मोदी जी के संवेदनशील और समग्रता से से भरे हुए नेतृत्व को आज स्वीकार कर रही हैं।

> राम का जीवन ही अपने आप में परिपूर्ण था। बचपन में ही शिक्षा संस्थानों की रक्षा के लिए विश्वामित्र के यहां राक्षसों का का वध किया, अहिल्या को सम्मान दिया, मां शबरी को गले लगाकर इस देश के गिरिजन और पिछड़े लोगों को गले लगाने का काम किया, महिलाओं का सम्मान किया

## आध्यात्मिक चेतना का जागरण

इसी समय में कोविड का संकट भी आया, इसी समय में 62 की तरह चीन ने अपना मुंह दिखाना शुरू किया। दृढ़ता के साथ नेतृत्व छाती-सीना तानकर खड़ा रहा, हिंदुस्तान की एक इंच जमीन नहीं गई, पहले कई बार हुआ था। इसी समय में पुंछ और पुलवामा में हमला हुआ। सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करके नेतृत्व की वीरता का भी परिचय दिया और घर में घुसकर जवाब देने का काम किया। हजारों बच्चे परीक्षा के वक्त जब आत्महत्या करते

थे, स्ट्रेस में आते थे, मनोरोग के शिकार बनते थे। एक पिता की तरह एक प्रजा वात्सल्य नेतृत्व का परिचय देते हुए परीक्षा पर चर्चा की भी बात की। जब मौका राम मंदिर का आया, तब एक संन्यासी की तरह, एक भक्त की तरह गौरवपूर्ण तरीके से अध्यात्म को जागृत करते हुए, आध्यात्मिक चेतना का जागरण करने का काम भी नरेन्द्र मोदी जी ने किया। मैं इसलिए कहता हूं कि बहुत लंबे समय से इस देश को ऐसे नेतृत्व की जरूरत थी। 68-70 साल तक देश ऐसे नेतृत्व में भटकता रहा, लटकता रहा; 140 करोड़ की जनता ने मोदी जी को चुनकर, एक सर्वगुण सम्पन्न नेता को चुनकर देश की सभी चुनौतियों को समाप्त किया।

मैं आज आपके माध्यम से यह कहना चाहता हूं कि राम मंदिर का निर्माण और राम मंदिर में रामलला की बाल प्रतिमा, मनोहारी दृश्य, आंख बंद कर देते हैं तो सामने वह प्रतिमा दिखाई पड़ती है। इतनी मनोहारी प्रतिमा बनाने का काम हुआ और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा भी हुई। एक प्रकार से समग्र भारतीय संस्कृति का मोदी जी के माध्यम से एक अभिव्यक्ति का काम हुआ। राम का जीवन ही अपने आप में परिपूर्ण था। बचपन में ही शिक्षा संस्थानों की रक्षा के लिए विश्वामित्र के यहां राक्षसों का का वध किया, अहिल्या को सम्मान दिया, मां शबरी को गले लगाकर इस देश के गिरिजन और पिछड़े लोगों को गले लगाने का काम किया, महिलाओं का सम्मान किया। गिलहरी, गिद्ध, वानर, रीछ, वनवासी सबको जोड़कर असत्य पर सत्य की विजय का झंडा श्रीराम ने फहराया। जब यह अयोध्या बन रही है, तब ढेरों लोगों के प्रस्ताव आए, मैं सबके बीच में कहने से अपने आपको रोक नहीं सकता कि अयोध्या के इंटरनेशनल एयरपोर्ट को श्रीराम का नाम दिया जाए। बड़ा लोक लुभावन प्रस्ताव था, परन्तु मोदी जी ने महर्षि वाल्मीकि का नाम देना उचित समझा। सारे मौकों पर दशरथ का, सीता माता का चौराहे पर नाम देने का प्रस्ताव आया था। मोदी जी ने कहीं जटायु को रखा, कहीं गिलहरी को रखा, कहीं हनुमान को रखा। समग्र समाज को साथ में लेने का काम किया।

## सामाजिक एकता का अद्भुत उदाहरण

यह जो मंदिर बना है, उसके निर्माण में भी पूरे समाज को साथ में रखने

का काम किया गया है। मैं आपको जरूर बताना चाहता हूं कि इसमें देश के हर हिस्से को स्थान देने का काम मंदिर के निर्माताओं ने किया है। एक भी प्रदेश ऐसा नहीं है, जहां से कुछ नहीं आया है। हर प्रदेश और आसपास के सभी देशों से रामकाज के लिए कुछ न कुछ समर्पित हुआ है, सबकी भूमिका रही है। पूरे समाज को जोड़कर यह मंदिर बना है। सामाजिक एकता का एक अद्भुत उदाहरण यह मंदिर है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अद्भुत उदाहरण यह मंदिर है।

अयोध्या में राम मंदिर विध्वंस के सामने विकास की विजय है। अयोध्या में राम मंदिर धर्मान्धता के सामने आध्यात्मिकता और भक्ति की विजय है। भारत के गौरवमय युग की यह शुरुआत है। आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत के रास्ते का प्रशस्तीकरण का यह पॉइंट है। भारत माता को विश्वगुरु बनाने के रास्ते की यह शुरुआत है।

मैं जरूर मानता हूं कि भगवान राम सालों से, सदियों से इस देश के प्रेरणा पुरुष रहे, जिनके चरित्र से न केवल यह देश बल्कि पूरी दुनिया संदेश लेती है। ऐसे प्रभु श्रीराम की मूर्ति की निज घर में स्थापना से इस देश में जो नया युग शुरू हुआ है, वह बहुत शुभंकर होगा। आने वाले दिनों में 2024 में भी मोदी जी के नेतृत्व में यहां सरकार बनेगी और यह शुभंकर शुरुआत हुई है, इसको गंतव्य स्थान तक ले जाने का काम करेगी।

❑❑❑

श्री अमित शाह, केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री

यह 22 जनवरी का दिन, भले ही कुछ लोग कुछ भी कहें, मैं स्पष्ट रूप से देख रहा हूं कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र सालों के लिए ऐतिहासिक दिन बनने वाला है, यह सबको समझकर चलना चाहिए। जो इतिहास को पहचानते नहीं हैं, ऐतिहासिक पलों को पहचानते नहीं, वे अपने अस्तित्व को, अपने वजूद को कहीं न कहीं खो देते हैं। मैं आज फिर से एक बार कहने वाला हूं कि 22 जनवरी का दिन दस सहस्त्र से भी अधिक सालों तक इस देश का ऐतिहासिक दिन रहने वाला है।

10 फरवरी, 2024

**श्री नरेन्द्र मोदी**, प्रधानमंत्री

गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, आज के इस पल की चर्चा करेंगे और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। आज दिन-दिशाएं... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। यह समय, सामान्य समय नहीं है। यह काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएं हैं

22 जनवरी, 2024

**भाजपा प्रकाशन विभाग**
6-ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002